जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

धर्मानुराग धर्म का प्रकार नहीं, राग का प्रकार है; अत: धर्म नहीं, राग ही हैं; धर्म तो एक वीतराग भाव ही है।
ह्न गागर में सागर, पृष्ठ : ९०

वर्ष : 28, अंक : 13 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (प्रथम) 2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

देश-विदेश में दशलक्षण महापर्व धूम-धाम से मनाया गया

दिनांक 8 सितम्बर से 17 सितम्बर, 2005 तक जैन परम्परानुसार मनाये जानेवाले सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व को देश-विदेश में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा लगभग 526 स्थानों पर विद्वान भेजे गये। पर्व के दौरान सभी स्थानों के जैन मंदिरों में पूजन-विधान प्रवचन, प्रौढ़ एवं बाल कक्षा, भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि आयोजनों के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

अहमदाबाद (नवरंगपुरा-गुज.) : यहाँ श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मंदिर नवरंगपुरा के तत्त्वावधान में नारणपुरा स्थित डी. के. पटेल हॉल में पर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनोपरान्त ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचनसार परमागम की गाथा 63-86 पर सरस-सुबोध शैली में लगभग 1200 साधर्मियों की उपस्थिति में मार्मिक व्याख्यान हुये तथा रात्रि में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर के समयसार के निर्जरा अधिकार पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

आपके प्रवचनों के पूर्व दोनों समय कु. अनुप्रेक्षा जैन, मुम्बई के प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल के तीन प्रवचन एवं पण्डित श्रीपालजी शास्त्री के एक प्रवचन का लाभ भी समाज को मिला।

इस अवसर पर श्रीमती शोभनाबेन सत्येन्द्रभाई शाह परिवार द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 15 सितम्बर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का एक प्रवचन श्रीमद् राजचन्द्र ज्ञानमन्दिर, पालडी में **मैं स्वयं भगवान हूँ** विषय पर हुआ। पर्व के पश्चात् क्षमावाणी के अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने सोनगढ़ एवं उमता के भूगर्भ में से निकले जिन मदिरों की वंदना भी की।

इस अवसर पर स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित 14 हजार 600 रुपयों का सत्साहित्य तथा 7995 घंटो के सी.डी. व कैसिट्स घर-घर पहुँचे। **ह्न अजितभाई मेहता**

जयपुर (श्री टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के तत्त्वावधान में प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया तथा गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के समयसार के संवर अधिकार पर तथा सायंकाल पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के दशलक्षण विधान की जयमाला पर सरस-सुबोध शैली में प्रवचन हुये।

दोपहर में इन्दौर से पधारे पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल द्वारा चौबीस ठाणा विषय पर गहन चिन्तन प्रस्तुत किया गया।

रात्रि में प्रवचन के पश्चात् टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रों तथा महिला मण्डल-बापूनगर के सहयोग विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न अजय जैन**

कोटा (राज.) : यहाँ पोरवाल दि. जैन मंदिर रामपुरा में आद. बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के आत्म कल्याणकारी मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के प्रतिदिन प्रात: परमभावप्रकाशक नयचक्र एवं रात्रि में धर्म के दशलक्षण विषय पर सरल-सुबोध शैली में प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में करणानुयोग की कक्षा विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। **ह्न विजय जैन**

कोलकाता (प.बंगाल) : यहाँ नवनिर्मित श्री दिगम्बर जैन मंदिर पद्मोपुकुर में पर्व के अवसर पर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ द्वारा पूजन विधान सम्पन्न कराये गये। इस अवसर पर दिसम्बर माह में होनेवाले पंचकल्याणक की तैयारी जोर-शोर से प्रारंभ की गई। **ह्न सुरेश पाटनी**

लंदन (इंग्लैण्ड) : यहाँ प्रात: दशलक्षण पूजन के पश्चात् पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली के समयसार की 17 से 19 गाथा पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक तथा दशधर्मों पर बोधगर्भित प्रवचन हुये। इसी अवसर पर लन्दन में होनेवाले आगामी पंचकल्याणक की पूर्व तैयारी भी की गई। प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचनों का लाभ भी मिला।

टीकमगढ़ (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन

ध्यान दें !

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन रात्रि 10.20 से 10.40 बजे तक प्रसारित हो रहे हैं। प्रसारण में किसी वजह से 5-7 मिनिट की देर भी हो सकती है। यदि निर्धारित समय से 10 मिनिट बाद तक भी प्रवचन प्रारंभ नहीं हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 09414717829 या (0141) 2705581 नं. पर सम्पर्क करें।

मंदिर (मुमुक्षु मण्डल) में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के प्रात: समयसार, दोपहर में नियमसार एवं रात्रि में पद्मनंदी पंचविंशतिका तथा रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशधर्मो पर मार्मिक प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित अंकितजी शास्त्री, कोलारस द्वारा दोपहर में छहढाला एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। पर्व के पश्चात् स्थानीय ब्र. ममताबेन, ब्र. मीना बेन एवं श्री खेमचन्दजी के सान्निध्य में पण्डितजी ने बुन्देलखण्ड के तीर्थों की यात्रा की।

हुबली (कर्नाटक) : यहाँ बाल ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के तीनों समय छह द्रव्य एवं सात तत्त्वों के स्वरूप पर मार्मिक प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित अभिजीतजी अलगोंडर द्वारा प्रात: सामूहिक पूजन के पश्चात् पूजन का स्वरूप, दोपहर में विभिन्न सैद्धान्तिक विषय एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन किये गये। ज्ञातव्य है कि अभिजीतजी के सत्तुर ग्राम में भी दो दिन प्रवचन हुये।

जयपुर (तेरहपंथी बड़ा मंदिर) : यहाँ प्रात: पण्डित संतोषकुमारजी झांझरी के मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में पण्डित मनीषजी 'कहान' शास्त्री के समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि पण्डित मनीषजी के प्रवचन प्रात: जनता कॉलोनी जैनमंदिर में भी हुये।

जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ श्री मुलतान दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित दिलीपकुमारजी बाकलीवाल इन्दौर के प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुये। रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत बालसंध्या एवं क्षणभंगुर संसार नाटक प्रशंसनीय रहे।

जयपुर (राजस्थान जैन सभा) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर बड़े दीवानजी के मन्दिर में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील पूजन की जयमाला के आधार से दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **ह्न महेन्द्र पाटनी**

जयपुर (सिवाड़ मंदिर) : यहाँ पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ के दशधर्मों पर प्रवचन हुये। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

इनके अतिरिक्त जयपुर के उपनगरों में निम्न विद्वानों द्वारा दशलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये ह्न **श्री दिग. जैन मंदिर, मालवीयनगर सैक्टर-10** तथा **महारानी फार्म जैनमंदिर** में पण्डित विनयकुमारजी पापड़ीवाल ⁎ **मानसरोवर-वरुणपथ** में डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री ⁎ **महात्मा गांधी नगर** में डॉ. प्रभाकरजी सेठी ⁎**अल्का नर्सिंग होम** में पण्डित चिरंजीलालजी जैन ⁎**जैन मंदिर मुशरफान** में विदुषी प्रभाजी जैन ⁎ **महावीर स्कूल सी-स्कीम** में पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी ⁎ **महावीर पब्लिक स्कूल** में कु. परिणति पाटील ⁎ **महावीर स्कूल नगर विभाग** तथा **शक्ति नगर** में पण्डित अनंतवीरजी जैन ⁎ **खजांची की नसियां** में पण्डित ताराचन्दजी सौगाणी ⁎ **महावीर नगर** में पण्डित रमेशचन्दजी जैन लवाणवाले ⁎ **चौमू का बाग** में विदुषी प्रेमलताजी जैन तथा **सूर्यनगर** में पण्डित गुलाबचन्दजी जैन एवं पण्डित अंकितजी जैन का लाभ मिला।

उदयपुर (सेक्टर-11) : यहाँ प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के समयसार कलश, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक के तृतीय अध्याय एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर दिग. जैन मंदिर में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुरवालों के तीनोंसमय क्रमश: समयसार, ज्ञानगोष्ठी एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। इस अवसर पर श्रीमती शीलादेवी मुलायमचन्द सिंघई परिवार द्वारा कल्पद्रुम मण्डल विधान का आयोजन भी किया गया। विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अभिनवजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित विनीतजी ग्वालियर के निर्देशन में पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री एवं ब्राह्मी मण्डल की बालिकाओं ने सम्पन्न कराये। सायंकाल बालकक्षा तथा रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न अशोक जैन**

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल, लश्कर में विदुषी राजकुमारीजी जैन, जयपुर के प्रात: समयसार के संवर अधिकार पर तथा सायंकाल जैसी मति वैसी गति कक्षा के उपरान्त दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। समाज की ओर से दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया।

पुणे (महा.) : यहाँ स्वाध्याय भवन में पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर के तीनों समय समयसार, प्रवचनसार एवं मुनिदशा के स्वरूप पर मार्मिक प्रवचन हुये। **ह्न प्रशांत दोशी**

मुम्बई (भूलेश्वर) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रात: संगीतमय नित्यनियम पूजन के पश्चात् पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री'दाऊ', जयपुर के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक व्याख्यान हुये। पूजन, बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित निखिलजी शास्त्री, कोतमा ने श्री राजकुमारजी जबलपुर के सहयोग से सम्पन्न कराये। **ह्न अशोक जैन**

मुम्बई (भायन्दर-वेस्ट) : यहाँ श्री दिग. जैन महावीर मंदिर में पर्व के अवसर पर प्रात: सामूहिक पूजन एवं दशलक्षण मण्डल विधान के पश्चात् पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर के प्रात: प्रवचनसार, दोपहर में समयसार नाटक एवं रात्रि में दशधर्मों पर सरल सुश्राव्य शैली में बोधगर्भित प्रवचन हुये। रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'भाई मेरे भूल न जाना, आनंद-यात्रा एवं मास्टर मिथ्यादृष्टि' आदि विशेष रहें। सम्पूर्ण कार्यक्रम में स्थानीय विद्वान पंकजभाई शाह एवं वरूण शास्त्री का सहयोग रहा।

कोलकाता (प.बंगाल) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़ द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **ह्न सुरेश पाटनी**

शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित प्रशांतकुमारजी काले द्वारा प्रात: आत्मानुशासन एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित प्रेमचन्दजी महाजन द्वारा पंचस्तोत्र एवं छहढाला की कक्षा तथा श्री रमेशचन्दजी महाजन द्वारा जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा ली गई। बाल कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पं. नाभिराजजी ने कराये।

पुणे (महा.) : यहाँ जैन बोर्डिंग में प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् दोनों समय पण्डित अनंतजी विश्वंभर द्वारा प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रमों में पण्डित संयमजी जैन का भी सहयोग मिला। **ह्न सुरेन्द्र गांधी**

पुणे-चिंचवड़ (महा.) : यहाँ पण्डित किशोरजी धोंगडे के प्रात: विभिन्न विषय, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। अन्तिम दिन पण्डित सुनीलजी बेलोकर के सहयोग से शांति विधान कराया गया तथा विशाल शोभायात्रा निकाली गई। **ह्न प्रकाशचन्द बड़जात्या**

हिम्मतनगर (गुज.) : यहाँ पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, बांसवाड़ा के प्रात: समयसार, दोपहर में पंचास्तिकाय एवं रात्रि में दशधर्म व इष्टोपदेश पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रतिदिन पूजन-विधान, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम श्री चेतनभाई दोशी के सहयोग से कराये गये।

मुम्बई (दादर) : यहाँ पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री जेवर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में जैनदर्शन के विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

मुम्बई (डोंबीवली) : यहाँ पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई के प्रात: समयसार एवं रात्रि में जिनधर्म प्रवेशिका तथा दशधर्म पर प्रवचन हुये।

सासनी (उ.प्र.) : यहाँ विदुषी स्वर्णलताजी जैन के छहढाला एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

अलीगढ़ (मंगलायतन) : यहाँ पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया

के प्रात: दृष्टि का विषय, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ पंचायती मन्दिर के. ब्लाक में पण्डित संभवजी शास्त्री, नैनधरा के दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: बीस तीर्थंकर विधान भी सम्पन्न हुआ।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ डी-ब्लाक में पण्डित निखिलजी जैन द्वारा तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला एवं धर्म के दशलक्षण पर प्रवचन हुये।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ तीरगरान दिग. जैन मंदिर में पण्डित प्रकाशदादा मैनपुरी एवं पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया के दशधर्मों पर प्रवचनों का लाभ मिला।पण्डित राहुलजी जैन का भी सक्रिय सहयोग रहा। **ह्न नवनीत जैन**

अकलतरा (म.प्र.) : यहाँ पण्डित पुनीतजी जैन द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

रुड़की (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित सुमितजी जैन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दसधर्मों पर प्रवचन हुये।

करेली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अभिषेकजी के द्वारा धर्म प्रभावना हुई।

केसली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित निर्मलकुमारजी जैन सागरवालों की प्रात: 5.30 बजे समयसार पर प्रौढ कक्षा के पश्चात् पूजन-विधान का आयोजन हुआ तथा तीनों समय आपके क्रमश: तत्त्वार्थसूत्र, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

पौन्नूरधाम (तमिल) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में ब्र. हेमचन्दजी हेम द्वारा प्रात: प्रवचनसार एवं रात्रि में आत्मसिद्धि पर प्रवचन हुये। साथ ही महावीर कल्याण केन्द्र में भी आपके एक प्रवचन का लाभ मिला।

कुरावड़ (राज.) : यहाँ पण्डित विकासकुमारजी शास्त्री, बानपुर द्वारा पूजनादि के पश्चात् देव-शास्त्र-गुरु पूजन पर प्रवचन, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पाठ के उपरान्त द्रव्यसंग्रह तथा रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। बालकों को पूजन-प्रक्षाल विधि का प्रायोगिक ज्ञान भी कराया गया।

अलवर (राज.) : यहाँ चेतन एन्क्लेव स्थित श्री महावीरस्वामी चैत्यालय में डॉ. श्रेंयासकुमारजी सिंघई, जयपुर के प्रात: समयसार पर एवं सायंकाल जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् श्री आदिनाथ जैन मन्दिर में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। इस अवसर पर दिग. जैन महिला समिति, अलवर द्वारा दिया जाने वाला दशलक्षण प्रतिभा-2005 का पुरस्कार कु. मीना नरेन्द्र जैन ने प्राप्त किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों में पण्डित अजीतजी शास्त्री का भी सहयोग रहा।

नरवर (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सचिनजी शास्त्री जबेरा के प्रात: श्रावक की ग्यारह प्रतिमा एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र विधान एवं अन्तिम दिन पंचमेरू विधान सम्पन्न हुआ।

मुलावा (महा.) : यहाँ पण्डित मुकुन्दजी ढोके के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार, दोपहर में प्रौढ़कक्षा एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

बावनगजा सिद्धक्षेत्र (म.प्र.) : यहाँ डॉ. दीपककुमारजी शास्त्री, जयपुर के तत्त्वार्थसूत्र एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशधर्मोंपर प्रवचन हुये तथा पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा द्वारा प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान, सायंकाल भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

धरमपुरी (म.प्र.) : यहाँ प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित कैलाशचन्दजी जैन, अशोकनगर के दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

वैर (राज.) : यहाँ प्रात: सामूहिक पूजन के पश्चात् पण्डित सोनलजी शास्त्री, जबेरा के दोपहर में इष्टोपदेश पर प्रौढ़कक्षा एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर में पण्डित कस्तूरचन्दजी जैन, भोपाल द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर तथा रात्रि में दशधर्मो पर मार्मिक प्रवचन हुये। इस अवसर पर दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन विधानाचार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल के निर्देशन में श्री हीराचन्दजी बोहरा, श्री श्रेणिक व मेधा लुहाड़िया के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

बून्दी (राज.) : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित भंवरलालजी जैन, कोटा के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये।

कुचड़ौद (म.प्र.) : यहाँ पण्डित विमलकुमारजी जलेसर द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा तथा रात्रि में दशधर्म पर प्रवचनों के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

थानागाजी (राज.) : यहाँ प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के पश्चात् प्रमेशजी शास्त्री जबेरा के मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा तथा रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

तालेड़ा (राज.) : यहाँ मोहनलालजी राठोड़ केशवरायपाटन के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये।

उदयपुर (स.भवन) : यहाँ पण्डित अरविन्दकुमारजी शास्त्री, सुजानगढ़ के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधनानगर में पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड के दोनों समय समयसार एवं दशलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी द्वारा मोक्षशास्त्र पर विवेचना की गई।

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ माणक चौक में निर्माणाधीन कुन्द. कहान स्वाध्याय भवन में डॉ. कपूरचन्दजी 'कौशल' भोपाल के प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का वाचन किया गया।

सिवनी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सरदारमलजी जैन, बेरसिया के तीनों समय मार्मिक प्रवचनों द्वारा समाज लाभान्वित हुई।

मुम्बई (अन्धेरी पू.) : यहाँ विशाल हॉल में प्रतिदिन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के सारगर्भित प्रवचन हुये। प्रवचनों की प्रेरणा से लोगों ने कम से कम सप्ताह में एक दिन प्रवचन सुनने का संकल्प किया। समस्त कार्यक्रमों का संचालन श्री मांगीलालजी हंडावत ने किया।

बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ खान्दूकॉलोनी स्थित पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर में प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान एवं तत्त्वार्थसूत्र वाचना के अतिरिक्त दोनों समय पण्डित संजयजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़ के प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में छहढाला पर कक्षा, सायंकाल सामायिक, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीमती ममता जैन एवं पण्डित गणतंत्र जैन के सहयोग से कराये गये। **ह्न महिपाल ज्ञायक**

राघौगढ़ (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अशोककुमारजी मांगुलकर के प्रात: योगसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

तलोद (गुज.) : यहाँ पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर के प्रात: समयसार नाटक, दोपहर में पंच परावर्तन एवं रात्रि में सम्यक्चारित्र के अन्यथा स्वरूप एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

वाशिम (महा.) : यहाँ श्री दिग. जैन आदिनाथ जिनालय, जवाहर कॉलोनी में पण्डित सुरेशचन्दजी जैन टीकमगढ़ के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में नियमसार तथा रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि कारंजा और शिरपुर में भी आपके एक -एक प्रवचन हुये। **ह्न संतोष पाटनी**

(शेष पृष्ठ 6 पर ....)

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

11

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

स्वामी समन्तभद्र ने केवलज्ञान की इस महिमा को जानकर सर्वज्ञता की सिद्धि करते हुए आप्तमीमांसा में लिखा है ह्न

'परमाणु आदि सूक्ष्म पदार्थ, राम-रावणादि काल से अन्तरित व्यक्ति और सुमेरु आदि क्षेत्र से दूरवर्ती पदार्थ किसी न किसी पुरुष के प्रत्यक्ष अवश्य हैं; क्योंकि वे अनुमान के विषय हैं। जो अनुमान के विषय होते हैं, वे किसी के प्रत्यक्ष भी अवश्य होते हैं।'

सर्वज्ञ को त्रिकालज्ञ सिद्ध करते हुए प्रवचनसार गाथा ३९ में कहा है कि 'यदि वह केवलज्ञान त्रिकालज्ञ न हो तो उसे दिव्य कौन कहेगा ?'

सर्वज्ञता से क्रमबद्ध पर्याय का अत्यन्त घना सम्बन्ध है अतः सर्वज्ञ का स्वरूप जान लेने पर क्रमबद्धपर्याय का स्वरूप समझना सरल हो जाता है; इसलिए पहले सर्वज्ञ के स्वरूप का खुलासा किया है। अब क्रमबद्धपर्याय को समझाते हैं।

यद्यपि 'क्रमबद्धपर्याय' स्वतः संचालित अनादि-निधन सुव्यवस्थित विश्व-व्यवस्था का एक ऐसा नाम है जो अनन्तानन्त सर्वज्ञ भगवन्तों के ज्ञान में तो अनादि से है ही, उनकी दिव्यवाणी से उद्भूत चारों अनुयोगों में भी है। इसे चारों ही अनुयोगों में सर्वत्र देखा, खोजा जा सकता है। बस, देखने के लिए निष्पक्ष शोधपरक दृष्टि चाहिए।

प्रथमानुयोग में ६३ शलाका पुरुषों के भूत और भावी भवों की चर्चा से पुराण भरे पड़े हैं।

भगवान नेमिनाथ ने द्वारका जलने की घोषणा बारह वर्ष पूर्व कर दी थी। साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया था कि किस निमित्त से, कैसे और कब ह्न यह सब-कुछ घटित होगा। अनेक उपायों के बाद भी वह सब कुछ उसी रूप में घटित हुआ।

भगवान आदिनाथ ने मारीचि के बारे में एक कोड़ा-कोड़ी सागर तक कब क्या घटित होने वाला है ह्न सब-कुछ बता ही दिया था। क्या वह सब-कुछ पहिले से निश्चित नहीं था ? असंख्य भव पहिले यह बता दिया गया था कि वे चौबीसवें तीर्थंकर होंगे। तब तो उनके तीर्थंकर प्रकृति का बंध भी नहीं हुआ था; क्योंकि तीर्थंकर प्रकृति बंध जाने के बाद असंख्य भव नहीं हो सकते। तीर्थंकर प्रकृति को बांधने वाला तो उसी भव में, या तीसरे भव में, अवश्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। अत: यह भी नहीं कहा जा सकता कि कर्म बंध जाने से उनका उतना भविष्य निश्चित हो गया था।

यहाँ तक कि पूजन-पाठ में भी कदम-कदम पर क्रमबद्धपर्याय का स्वर मुखरित होता सुनाई देता है ह्न

भामण्डल की द्युति जगमगात।
भवि देखत निजभव सात-सात।।

तीर्थंकर भगवान के प्रभामण्डल में भव्यजीवों को अपने-अपने सात-सात भव दिखाई देते हैं। उन सात भवों में तीन भूतकाल के, तीन भविष्य के एवं एक वर्तमान भव दिखाई देता है।

इसके अनुसार प्रत्येक भव्य के कम से कम भविष्य के तीन भव तो निश्चित रहते ही हैं, अन्यथा वे दिखाई कैसे देते ?

''क्रमबद्धपर्याय से आशय यह है कि **इस परिणमनशील जगत की परिणमन व्यवस्था क्रमनियमित है। जगत में जो भी परिणमन निरन्तर हो रहा है, वह सब एक निश्चित क्रम में व्यवस्थितरूप से हो रहा है।** स्थूल दृष्टि से देखने पर जो परिणमन अव्यवस्थित दिखाई देता है, वह भी नाटक के मंच पर पड़ी गरीबी की प्रतीक टूटी खाट प्रदर्शन की भाँति सुव्यवस्थित व्यवस्था के अंतर्गत ही है।''

ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ मात्र यह नहीं कहा गया है कि पर्यायें क्रम से होती हैं; अपितु यह भी कहा गया है कि वे नियमितक्रम में होती हैं। आशय यह है कि **जिस द्रव्य की, जो पर्याय, जिस काल में, जिस निमित्त व जिस पुरुषार्थपूर्वक, जैसी होनी है; उस द्रव्य की, वह पर्याय, उसी काल में, उसी निमित्त व उसी पुरुषार्थपूर्वक वैसी ही होती है, अन्यथा नहीं ह्न यह नियम है।**

जैसा कि कार्तिकेयानुप्रेक्षा में कहा गया है कि ह्न ''जिस जीव के, जिस देश में, जिस काल में, जिस विधान से, जो जन्म अथवा मरण जिनदेव ने नियतरूप से जाना है; उस जीव के, उसी देश में, उसी काल में, उसी विधान से वह अवश्य होता है। उसे इन्द्र अथवा जिनेन्द्र कौन टालने में समर्थ है? अर्थात् उसे कोई नहीं टाल सकता है। इसप्रकार निश्चय से जो द्रव्यों को और उनकी समस्त पर्यायों को जानता है, वह सम्यग्दृष्टि है और जो इसमें शंका करता है, वह मिथ्यादृष्टि है।''

इसी क्रम में प्राचीन हिन्दी कवियों और टीकाकारों के द्वारा सशक्त भाषा में जो पद्य व गद्य में विचार व्यक्त किए गए हैं, वे मूलतः द्रष्टव्य हैं।

भैया भगवतीदासजी कहते हैं ह्न

''जो-जो देखी वीतराग ने, सो-सो होसी वीरा रे।
बिन देख्यो होसी नहिं क्यों ही, काहे होत अधीरा रे।।
समयो एक बढ़ै नहिं घटसी, जो सुख-दुख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करै मन कूड़ो, होय वज्र ज्यों हीरा रे।।''

कवि बुधजनजी ने बहुत ही सरल भाषा में क्रमबद्धपर्याय की श्रद्धा के बल पर स्वयं को निर्भय होने की घोषणा की है। वे लिखते हैं ह्न

'जा करि जैसें जाहि समय में, जो होतव जा द्वार।
सो बनिहै टरिहै कछु नाहीं, करि लीनों निरधार।।
हमको कछु भय ना रे! जान लियो संसार।।'

उक्त प्रकरणों में प्रायः सर्वत्र ही सर्वज्ञ के ज्ञान को आधार मानकर भविष्य निश्चित है ह्न ऐसा कहा गया है और उसके आधार पर अधीर नहीं होने का एवं निर्भय रहने का उपदेश दिया गया है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि 'क्रमबद्धपर्याय' की सिद्धि में सर्वज्ञता सबसे प्रबल हेतु हैं।

सर्वज्ञ को धर्म का मूल कहा गया है। जो व्यक्ति सर्वज्ञ भगवान को द्रव्यरूप से, गुणरूप से और पर्यायरूप से जानता है, वह अपने आत्मा को भी जानता है और उसका मोह नियम से क्षय हो जाता है। अत: अरहंतों को जानना तो हमारी प्राथमिकता है।[१] जब सर्वज्ञता हमारा लक्ष्य है, प्राप्तव्य है, आदर्श है, उसे प्राप्त करने के लिए सारा यत्न है तो फिर उसके सच्चे स्वरूप को तो समझना ही होगा। उसकी उपेक्षा कैसे की जा सकती है।

'सर्वज्ञता' और 'क्रमबद्धपर्याय' परस्परानुबद्ध हैं। एक का निर्णय व सच्ची समझ दूसरे के निर्णय के साथ जुड़ी हुई है। दोनों का निर्णय ही सर्वज्ञस्वभावी निज आत्मा के अनुभव के सम्मुख होने का साधन है।

अम्मा ने पूछा ह्न ''यह तो ठीक है; परन्तु आये दिन दुर्घटनाओं में जो अकाल मृत्यु होती है, हत्याओं और आत्महत्याओं द्वारा जो बे-मौत मौतें होती हैं, उनका क्या होगा ? क्या ये सब भी क्रमबद्धपर्याय के अनुसार अपने-अपने स्व-समय में ही होती हैं ?

यदि ये सर्वज्ञ के जाने अनुसार पूर्व निर्धारित अपने समय में होतीं हैं तो हत्यारों को अपराधी क्यों माना जाता ? और उन्हें मौत तक का कठोर दण्ड क्यों दे दिया जाता है ?''

सावधान करते हुए समताश्री ने बताया कि ''वस्तुत: हत्यारा व्यक्ति जीव घात के कारण अपराधी नहीं है; बल्कि उसने जो हत्या का भाव किया, वह अपने उस हत्या के अभिप्राय के कारण अपराधी है और उसे उसी अभिप्राय की सजा मिलती है, जीवघात तो जब जिन कारणों से होना था, तदनुसार ही हुआ है।

उदाहरणार्थ एक पानी से भरे उस घड़े को लें जो शिवपिण्डी पर लटक रहा है और उसमें १ लीटर पानी है। एक गणितज्ञ से पूछा कि यह घड़ा कब तक खाली होगा। उसने ५ मिनिट में टपके पानी को नाप कर गणित से बता दिया, २४ घंटे में। वही प्रश्न एक ज्योतिषी से पूछा ह्न उसने कहा एक घंटे में। दोनों के उत्तरों को सुनकर जब तीसरे ज्ञानी पुरुष से पूछा कि कौन-सा उत्तर सही है कौन गलत ? तो उन्होंने कहा ह्न अपनी-अपनी दृष्टिकोण से दोनों ही सही हैं। गणितज्ञ के अनुसार एक-एक बूँद गिरती तो २४ घंटे ही लगते; परन्तु ज्योतिष के ज्ञान के अनुसार १ घंटे बाद एक लड़का आकर छेद बड़ा कर देगा और पूरा पानी एक घंटे में बह जायेगा। यह कथन भी सही है।

इसीप्रकार अकालमृत्यु में काल समवाय के सिवाय निमित्तादि की अपेक्षा मुख्य रहती है; आगम में काल के अतिरिक्त चार समवायों का एक नाम अकाल भी है; अत: यदि काल को गौण करो तो वह मरण अकाल मरण कहलाता है; जबकि सर्वज्ञ के ज्ञान के अनुसार उस जीव का उसी समय मरण उनके ज्ञान में आया था। इसीकारण ज्ञानी मृत्युभय से निर्भय हो जाते हैं। फिर अकाल मरण होता ही नहीं है ह्न ऐसा एकान्त नहीं है, क्योंकि काल को गौण किया जाता है, उसका अभाव नहीं।

तात्पर्य यह है कि पाँच समवायों में काल के अतिरिक्त अन्य स्वभाव, पुरुषार्थ, होनहार और निमित्तरूप चार समवायों की मुख्यता से मृत्यु की बात करें तो उसे अकाल मरण कहते हैं तथा जब काल की मुख्यता से बात करें तो वही मृत्यु की घटना स्वकाल में हुई ह्न ऐसा कहा जाता है।''

एक श्रोता ने पूछा ह्न जब सबकुछ क्रमबद्ध ही है तो आप समझाने के चक्कर में पड़कर व्यर्थ परेशान ही क्यों हो रहीं हैं ? जब हमारी समझ में आना होगा, आ जावेगा और यदि नहीं आना होगा, तो नहीं आवेगा; आप इतनी अधीर क्यों हो रही हैं ?

समताश्री ने कहा ह्न 'हम क्यों परेशान हो रहे हैं, इतने अधीर क्यों हो रहे हैं ?' ह्न आपका यह कहना भी ठीक ही है; परन्तु हम आपके कारण नहीं, अपने राग के कारण अधीर हो रहे हैं। हम भी चाहते हैं कि हम भी जगत की चिन्ता में व्यर्थ ही अधीर न हों; पर हम क्या करें हमें यह राग आ ही जाता है, आये बिना रहता नहीं है और इस भूमिका में यह अनुचित भी नहीं है। मुक्तिमार्गी भावलिंगी मुनिराजों को भी इसप्रकार का राग आये बिना नहीं रहता, अन्यथा परमागमों की रचना भी कैसे होती, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि यह राग अच्छा है। आखिर है तो राग ही, जो आकुलतारूप ही है। जो इस शुभोपयोग से ऊपर उठकर स्वरूप में स्थिर हो जाय तो उससे बढकर तो कोई बात हो ही नहीं सकती, परन्तु मुनिराजों के समान हमारे भी यह राग आये बिना नहीं रहता कि जिस सत्य को हमने समझा है, जिससे हमें अनंत शान्ति मिली है, उस सत्य को सारा जगत समझ कर अभूतपूर्व शान्ति प्राप्त करे।

जिन्हें क्रमबद्धपर्याय में पुरुषार्थ लुप्त होता हुआ दिखता है, उन्हें पुरुषार्थ की परिभाषा और स्वरूप का जैनदर्शन के आलोक में पुनरावलोकन करना होगा।'

दूसरे श्रोता ने पूछा ह्न 'सर्वज्ञ भगवान ने जब हमें धर्म का प्रगट होना देखा होगा, उसीसमय प्रगट होगा तो इससमय यह सब समझाने की क्या जरूरत है ?'

उत्तर में समताश्री ने कहा ह्न ''अरे भाई ! 'सर्वज्ञ भगवान ने जो देखा है, उसीप्रकार सब होता है' ह्न ऐसे सर्वज्ञ के ज्ञान का और वस्तु के स्वभाव का निर्णय जिसने किया ? उसकी वह ज्ञान पर्याय आत्मस्वभावोन्मुख हुये बिना नहीं रहती तथा उसे वर्तमान में ही धर्म का प्रारम्भ हो जाता है, और सर्वज्ञ भगवान के ज्ञान में भी वैसा ही ज्ञात हुआ होता है।

जिसने आत्मा के पूर्णज्ञान सामर्थ्य को प्रतीति में लेकर उसमें एकता स्थापित की, वास्तव में उसी को सर्वज्ञ के ज्ञान की प्रतीति हुई कहलाती है।

वास्तव में ज्ञायकपना ही आत्मा का पुरुषार्थ है, ज्ञायकपने से पृथक दूसरा कोई सम्यक् पुरुषार्थ नहीं है।

अरे ! मोक्ष प्राप्त करनेवाले जीव मोक्ष के लिये ऐसे पुरुषार्थ पूर्वक ही मोक्ष प्राप्त करेंगे ह्न ऐसा ही सर्वज्ञ भगवान ने देखा है। ऐसे यथार्थ निर्णय में तो जहाँ ज्ञानस्वभाव का निर्णय हुआ वहाँ मोक्षमार्ग का सम्यक् पुरुषार्थ भी आ गया। स्वभाव और पुरुषार्थ की श्रद्धा वाले की होनहार भी भली होती है और उसकी काललब्धि भी मुक्तिमार्ग पाने के निकट आ गई, इसतरह जिसके चार-चार समवाय हो गये उसको निमित्त भी तदनुकूल मिलता ही है।

इस सर्वज्ञता के और क्रमबद्धपर्याय के निर्णय में वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त स्वत: फलित हो जाता है; क्योंकि वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त में छहों द्रव्य-गुण-पर्यायों के परिणमन को स्वतंत्र, स्वावलम्बी बताते हुए भी उनमें जो कारण-कार्य का स्वाभाविक सम्बन्ध दर्शाया है, वही सब प्रक्रिया क्रमबद्धपर्याय में भी होती है।

जो व्यक्ति इन्हें समझकर इनका श्रद्धालु हो जाता है, नियम से उसका संसार सागर गोखुर के गड्ढे जैसा अल्प रह जाता है।''

समय समाप्त होने को ही था कि अम्माजी ने पूछा ह्न 'धर्माचरण करते हुए भी कषायें कम नहीं होती। राग-द्वेष यथावत चालू रहते हैं। मैं भी उन्हीं में एक हूँ, कृपया इसका और उपाय हो तो वे भी बता सकें तो अच्छा है।'

समताश्री ने कहा 'यह विषय भी विचारणीय है; परन्तु अभी समय हो गया। कल ज्योत्स्ना ने महावीर जयंती के उपलक्ष में जो गोष्ठी का आयोजन रखा है। उसका विषय चार अभाव से वस्तुस्वातंत्र्य की सिद्धि है। इसी की चर्चा में आपकी समस्या का समाधान हो जायेगा।' ●

(पृष्ठ 3 का शेष ....)

एर्नाकुलम (केरल) : यहाँ पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ के प्रात: दशधर्म एवं दोपहर में विविध विषयों पर प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित अमितजी शास्त्री लुकवासा के मिथ्यादर्शन के स्वरूप पर प्रवचन हुये।

मन्दसौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिग. जैन मंदिर कालाखेत में पण्डित हुकमचन्दजी जैन राघौगढ़वालों के तीनों समय मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

रायपुर (म.प्र.) : यहाँ चन्द्रप्रभ चैत्यालय में श्री अशोककुमारजी जैन एवं सुन्दरलालजी जैन द्वारा दोनों समय प्रवचन हुये तथा शंकरनगर चैत्यालय में श्री नेमिचन्दजी जैन देवरीवालों के प्रवचनों का लाभ मिला।

लूणदा (राज.) : यहाँ पंचबालयति जैन मंदिर में प्रात: पण्डित सुनीलकुमारजी नाके के समयसार एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित विवेककुमारजी शास्त्री, पिड़ावा द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं छहढाला पर कक्षा ली गई। इस अवसर पर गणधरवलय ऋषिमण्डल विधान का आयोजन भी किया गया। **ह्न ललीत जैन**

एलोरा (औरंगाबाद–महा.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर के दोपहर में रत्नकरण्डश्रावकाचार तथा रात्रि में पण्डित प्रदीपजी माद्रप के इष्टोपदेश एवं पण्डित देवकुमारजी कान्हेड के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। कक्षा 9 व 10 के छात्रों द्वारा तत्त्वार्थसूत्र का पाठ होता था। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी हुआ।

गढ़कोटा (म.प्र.) : यहाँ पण्डित संतोषकुमारजी बकस्वाहा के प्रात: विभिन्न विषयों पर एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं जिनेन्द्र भक्ति के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई।

पीठ (राज.) : यहाँ प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी के विधान की जयमाला एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित सी.बाबू तमिलनाडू द्वारा छहढाला की कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई।

जावर (म.प्र.) : यहाँ पण्डित चैतन्यप्रकाशजी बकस्वाहा द्वारा दोपहर में छहढाला तथा रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन हुये। प्रतिदिन विभिन्न विधानों का आयोजन किया गया।

सहारनपुर (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित अरुणजी मोदी सागर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। पण्डित अरविन्दजी अमरकोट द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन, दोपहर में कक्षा तथा पण्डित आशुतोषजी मंगलायतन द्वारा बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

वनखेड़ी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित नितिनकुमारजी खड़ैरी के प्रात: बारह भावना, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

देवली (राज.) : यहाँ पण्डित विवेकजी सागर के प्रात: बारह भावना एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढाला की कक्षा ली गई।

बोहेड़ा (राज.) : यहाँ पण्डित वी. रमेश तमिलनाडू द्वारा प्रात: विभिन्न विषय, दोपहर में रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

इटावा–कोटा (राज.) : यहाँ प्रात: चौबीस तीर्थंकर विधान के पश्चात् पण्डित दीपकजी अथणे एवं पण्डित संतोषजी तमिलनाडू द्वारा तीनों समय रत्नकरण्डश्रावकाचार, छहढाला एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

डूंगरपुर (राज.) : यहाँ पण्डित विमोशकुमारजी शास्त्री खड़ैरी के दशधर्म पर प्रवचन हुये। सायंकाल बाल कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृ. कार्यक्रम कराये गये।

बीकानेर (राज.) : यहाँ पण्डित कमलेशजी बण्डा द्वारा प्रात: छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन किये गये। दोपहर में बालकक्षा ली गई।

करहल (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित अंकितकुमारजी खनियांधाना द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षशास्त्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

कुँआ (डूंगरपुर–राज.) : यहाँ पण्डित जे. जयकुमारजी जैन तमिलनाडू एवं पण्डित सौरभजी जैन कर्रापुर के प्रात: विभिन्न विषयों पर एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा ली गई।

वैराग (महा.) : यहाँ पण्डित उमेशजी घोसरवाडे द्वारा दोपहर में कक्षा एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

कानपुर (उ.प्र.) : यहाँ किदवईनगर में पण्डित अमितजी शास्त्री, गुना के प्रात: इष्टोपदेश एवं रात्रि में जिनधर्म प्रवेशिका तथा दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

बोरी (महा.) : यहाँ पण्डित आदेशजी बोरालकर के प्रात: विभिन्न विषयों पर तथा रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

जयथल (राज.) : यहाँ पण्डित जिनेन्द्रजी नन्देश्वर द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं सायंकाल बालकक्षा के पश्चात् दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

पीसांगन (राज.) : यहाँ पण्डित धर्मचन्दजी जैन जयथल के रात्रि में समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पण्डित सन्मतिजी शास्त्री द्वारा इन्द्रध्वज मण्डल विधान सम्पन्न कराया गया।

मगरौन (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खड़ैरी के प्रात: तारण–तरण श्रावकाचार एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचनों के अतिरिक्त दोपहर में छहढाला, तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। बालकक्षा भी चली।

कूँण (राज.) : यहाँ पण्डित मयंकजी शास्त्री के समयसार, इष्टोपदेश एवं दशधर्मों पर तीनों समय प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा ली गयी।

फालेगाँव (महा.) : यहाँ पण्डित रमेशजी शिरहट्टी के प्रात: समयसार, दोपहर में नियमसार एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

शुजालपुर मण्डी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सुदीपकुमारजी शास्त्री बर्गी के प्रात: विभिन्न विषय एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढाला एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। साथ ही रात्रि में प्रतिदिन स्वाध्याय करने की परम्परा प्रारंभ की गई।

कुशलगढ़ (राज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर में पण्डित सौरभजी शास्त्री गढ़ाकोटा के प्रात: बारह भावना, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। साथ ही चौबीस तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। तथा श्री दिग. जैन शांतिनाथ मंदिर में पण्डित अभिलाषजी, कोटा के दोनों समय प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा ली गई।

मलकापुर (महा.) : यहाँ पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षशास्त्र एवं रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन हुये। स्थानीय मण्डल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

बड़गांव (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अमितजी शास्त्री जबेरावालों के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में रत्नकरण्डश्रावकाचार एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

जेतपुर (गुज.) : यहाँ पण्डित सचीन्द्रजी शास्त्री गढाकोटा के दोनों समय रत्नकरण्डश्रावकाचार एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

पानकन्हेरगाँव (महा.) : यहाँ नवनिर्मित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित परागजी महाजन कारंजा के तीनों समय रत्नकरण्डश्रावकाचार, मोक्षशास्त्र एवं दशधर्मों पर सरलभाषा में प्रवचन हुये।

दुर्ग (छ.ग) : यहाँ प्रात: दशलक्षण पूजन के पश्चात् पण्डित संजयकुमारजी सेठी, जयपुर के दशधर्म एवं मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित विजयजी

मोडी द्वारा छहढाला की प्रौढ़कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। प्रात: तत्त्वार्थसूत्र विधान हुआ। ह्न कुन्दनमल सेठी

दिल्ली : यहाँ पुष्पांजलि एनक्लेव में पण्डित राजेन्द्रजी बंसल अमलाई के प्रात: समयसार एवं दशधर्म पर तथा रात्रि में सरस्वती विहार में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं दशधर्म पर प्रवचन हुये। एक प्रवचन आत्मार्थी ट्रस्ट में भी हुआ।

पंढ़रपुर (महा.) : यहाँ पण्डित फूलचन्दजी मुक्तिरवार हिंगोली के प्रात: समयसार, दोपहर में निमित्तोपादान चिट्ठी तथा रात्रि में प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। दशलक्षण मण्डल विधान, बाल कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित सुनीलजी बेलोकर द्वारा कराये गये।

सावदा (महा.) : यहाँ पण्डित विजयजी बोरालकर के प्रात: दशधर्म, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

मण्डलेश्वर (म.प्र.) : यहाँ पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी के दोपहर में सात तत्त्वसंबंधी भूल एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

कैराना (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अश्विनजी नानावटी के रात्रि में दशधर्म तथा दोपहर में पण्डित अभिषेकजी केलवाड़ा के छहढाला पर प्रवचन हुये। इस अवसर पर रत्नत्रय विधान का आयोजन भी किया गया।

बड़वाह (म.प्र.) : यहाँ प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित शैलेन्द्रजी पण्डा के मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

ल्याहरी (महा.) : यहाँ पण्डित पंकजजी दहातोण्डे के प्रात: छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

कन्नड़ (महा.) : यहाँ पण्डित रविन्द्रजी महाजन के दशधर्मों पर प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित सचिनजी पाटनी के एक प्रवचन का लाभ भी मिला।

जैतपुरकलां (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित अभिजीतजी पाटील के तीनों समय छहढाला एवं दशधर्मों पर प्रवचनों का लाभ मिला। पण्डित सुरेशजी तमिल द्वारा बाल कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। ह्न नीरज जैन

मोताला (महा.) : यहाँ पण्डित धवलजी गांधी, नातेपुते के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। ह्न नितिन जैन

बेलोरा (महा.) : यहाँ पण्डित रविन्द्रजी आलमान के प्रात: दशधर्म, दोपहर में बारह भावना एवं रात्रि में विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये।

साखरा (महा.) : यहाँ पण्डित मिलिन्दजी केटकाले के तत्त्वार्थसूत्र एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल भक्ति एवं बालकक्षा का आयोजन हुआ।

अम्बाह (म.प्र.) : यहाँ पण्डित प्रदीपजी जैन पथरिया के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित अभिषेकजी दिग्सर द्वारा बालकक्षा ली गई।

लाम्बाखोह (राज.) : यहाँ पण्डित प्रीतेशजी शास्त्री के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

परली वैजनाथ (महा.) : यहाँ पण्डित संतोषजी दहातोंडे शास्त्री के प्रात: विभिन्न विषयों पर एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

इस अवसर पर पण्डितजी की सरस-सुबोध शैली से प्रभावित होकर श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर ट्रस्ट की ओर से पण्डित संतोषजी को **शास्त्रवाचस्पति** की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मगरौनी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सुदीपजी कान्हेड, देवलगाँवसाकरशा के दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 37

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

स्व और पर के रूप में विभक्त सम्पूर्ण जगत के आकारों का अवभासन विकल्प है, अर्थविकल्प है, ज्ञान है। दर्पण का उदाहरण देकर आचार्यदेव ने यहाँ ज्ञान के लिए एक शर्त रखी है कि ज्ञान में स्व और पर दोनों एकसाथ मालूम पड़ना चाहिए, तभी वह ज्ञान है।

मुमुक्षुओं में यह चर्चा रहती है कि दो पदार्थों का एक साथ ज्ञान नहीं हो सकता है। अरे भाई ! यह बहुत ही स्थूल कथन है। मैं आपसे पूछता हूँ कि मेरे आगे जो २०० व्यक्ति बैठे हैं; वे मुझे एकसाथ दिखाई दे रहे हैं। यदि एकसाथ दिखना नहीं होवे तो प्रमाण नामक ज्ञान ही नहीं रहेगा।

जिसप्रकार दर्पण में स्व और पर दोनों एकसाथ प्रतिबिम्बित होते हैं; उसीप्रकार हर ज्ञान में स्व और पर दोनों एकसाथ प्रतिबिम्बित होते हैं। इसमें ज्ञानी और अज्ञानी दोनों के ज्ञान समाहित हैं।

हमने पर को जाना; इसलिए स्व जानने में नहीं आयेगा ह्न ऐसा है ही नहीं। यहाँ आचार्य ने ज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि जिसमें स्व और पर एकसाथ प्रतिभासित होते हैं, वह ज्ञान है। 'ये मैं हूँ' और 'ये मैं नहीं हूँ' जहाँ ऐसा स्व-पर के भेदपूर्वक जानना होता है, वह ज्ञान है; यह अज्ञानियों का प्रकरण नहीं है। यह ज्ञानचेतना का प्रकरण है, यहाँ ज्ञानचेतना की परिभाषा दी है।

ज्ञानचेतना को कई घंटों समझाने के बाद भी लोग यह कहते हुए पाये जाते हैं कि ह्न 'एकसाथ दो को तो जान नहीं सकते' अरे ! यह तो स्थूल कथन है। जैसे छात्रों को यह सलाह दी जाती है कि भाई ! तुम अंग्रेजी पढ़ो अथवा धर्म पढ़ो। मेडिकल में जाओ या इंजिनियरिंग पढ़ लो; धर्म कर लो या धंधा कर लो, दो काम एकसाथ नहीं हो सकते हैं। कहा जाता है कि ह्न

दो मुँह सुई सिये न कन्था, दो मुख पंछी चले न पंथा।
दोय काम नहीं होय सयाने, विषय-भोग अरु मोक्ष भी जाने।।

पाँचवें गुणस्थान में सम्यग्दर्शन भी विद्यमान है, एकदेश संयम भी है एवं भूमिका के अनुसार विषयभोग भी हैं। समयसार नाटक में कहा है ह्न

जोलौ अष्टकर्म को विनाश नाही सर्वथा।
तोलौ अंतर आत्मा में धारा दोय वरनी।।
एक ग्यानधारा एक सुभासुभ कर्मधारा,
दुहूं की प्रकृति न्यारी न्यारी न्यारी धरनी।।
इतनौ विसेस जु करमधारा बंधरूप,
पराधीन सकति विविध बंध करनी।।
ग्यानधारा मोखरूप मोख की करनहार,
दोख की हरनहार भौ समुद्र-तरनी।।

जबतक अष्टकर्म का पूर्णत: नाश नहीं हुआ है, तबतक अंतरात्मा ज्ञानधारा एवं शुभाशुभ कर्मधारा दोनों एकसाथ चलती हैं।

छठवें गुणस्थान में यह जीव शुभभाव में रहता है; फिर भी उसके तीन कषाय के अभावरूप शुद्ध परिणति विद्यमान रहती है। परिणति पर्याय का ही नाम है अर्थात् वह प्रगट पर्याय में विद्यमान है।

इसप्रकार स्व-परावभासन ही ज्ञान है, अर्थविकल्प है। अवभासन अर्थात् आकार का अवलोकन ही विकल्प है। आचार्यदेव ने रागात्मक विकल्प का निषेध किया है। यह स्व है और यह पर है ह्न ऐसा जो ज्ञान में जानना हुआ; यह भी विकल्पात्मक है, इसका निषेध नहीं है। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

आचार्य अमृतचन्द्र पुरस्कार 9 अक्टूबर को

नई दिल्ली : सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज के पावन सान्निध्य में जैनसमाज के मूर्धन्य विद्वान, सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त लेखक एवं पत्रकार **पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल** को राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटील द्वारा 9 अक्टूबर, 2005 को प्रात: 10 बजे खारवेल सभा भवन कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशन इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली में नव प्रतिष्ठापित आचार्य अमृतचन्द्र पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा।

सम्मानस्वरूप एक लाख रुपये की मानधन राशि, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति भव्य समारोह में प्रदान की जायेगी। समारोह के मुख्यवक्ता लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ के उपकुलपति डॉ. वाचस्पति उपाध्याय होंगे।

ह्न अखिल बंसल

छपकर तैयार

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा लिखित बालकों के लिये निकाले जा रहे साहित्य की शृंखला में 'चलो सिनेमा: चलो पाठशाला भाग-2' तथा 'जैन के. जी. भाग-2 व 3' के अंग्रेजी भाषा संस्करण भी छपकर तैयार हो गये हैं। इच्छुक महानुभाव निम्न स्थानों से प्राप्त कर सकते हैं ह्न

(1) डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, ए-1704, गुरुकुल टावर , जे.एस. रोड, दहीसर (प.) मुम्बई - 68

(2) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

(3) श्री सीमन्धर जिनालय, 173-175, मुम्बादेवी रोड, मुम्बई-02

(4) पू.कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर,लाम रोड, देवलाली, नासिक

अहिंसा प्रेमी ह्न पोस्टर मंगायें

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन एवं जैन युवा फैडरेशन जबलपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दीपावली के अवसर पर पटाखे विरोधी अभियान के तहत रंगीन पोस्टर का प्रकाशन किया गया है। इसके अन्तर्गत देश की कोई भी संस्था अथवा व्यक्ति प्रति पोस्टर चार रुपये (डाक व्यय सहित) भेजकर मंगा सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र - सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.), मो. 098273 43205

शिविर लगाने हेतु सम्पर्क करें

महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्व प्रचार-प्रसार योजना के अन्तर्गत दिनांक 5 नवम्बर से 12 नवम्बर, 2005 तक बाल एवं युवाओं हेतु एक संस्कार ग्रुप शिविर अकोला, अमरावती, यवतमाल, बुलढाणा एवं वाशिम जिलों में आयोजित किया जाना है। जिन स्थानों के आत्मार्थी अपने गाँव/शहर में शिविर लगवाने के इच्छुक हों वे निम्न पते पर 12 अक्टूबर, 2005 तक सम्पर्क करें।

ह्न विश्वलोचनकुमार जैनी (समिति प्रमुख)
हीरा कुटीर, मस्कासाथ, नागपुर-440002 (महा.)
फोन-0712-2762624, मो. 094221 46642

संक्षिप्त समाचार

➔ ओंकारेश्वर (सिद्धवरकूट) जल विद्युत परियोजना में नर्मदा नदी के तट पर ब्लास्टिंग के दौरान करीब 800 वर्ष प्राचीन भगवान आदिनाथ, भगवान शांतिनाथ एवं भगवान पार्श्वनाथ की दिगम्बर जैन प्रतिमायें प्राप्त हुई।

➔ श्रवणबेलगोला में 8 से 19 फरवरी, 2006 तक आयोजित मस्तकाभिषेक के टी.वी. पर सीधे प्रसारण हेतु भट्टारक चारुकीर्तिस्वामीजी के सान्निध्य में कमेटी का गठन।

➔ भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान सौरभ गांगुली एवं कोच ग्रेग चैपल के बीच हुये विवादों को बीसीसीआई बोर्ड की समीक्षा समिति ने सुलझाया।

➔ राष्ट्रपति कलाम ने साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिये प्रख्यात तमिल लेखक डी. जयकान्तन को 38 वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया।

➔ जम्मू-कश्मीर की जेलों में बन्द 50 लोगों की रिहाई होगी।

➔ राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के लिये त्रिपुरा के कलाकारों द्वारा कुटिया का निर्माण किया गया।

➔ प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाने हेतु किसानों को परम्परागत अनाज के साथ अन्य फसलें अपनाने की सलाह दी।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

06 से 15 अक्टूबर	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
16 से 23 अक्टूबर	**दिल्ली**	**समयसार गोष्ठी**
25 से 29 अक्टूबर	**देवलाली**	**विधान**
30 अक्टू. से 02 नवम्बर	**धरमपुर**	**दीपावली**
06 नवम्बर	**जयपुर**	**गिरनार रैली**
16 से 21 नवम्बर	**किशनगढ़**	**पंचकल्याणक**
28 नव.से 5 दिसम्बर	**कोलकाता**	**सिद्धचक्र विधान**
18 दिसम्बर	**दिल्ली**	**गिरनार-महारैली**
25 से 31 दिसम्बर	**कोलकाता**	**पंचकल्याणक**
13 से 19 जनवरी,06	**सागर**	**पंचकल्याणक**
4 से 11 फरवरी, 06	**कोटा**	**पंचकल्याणक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अक्टूबर (प्रथम) 2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शनतथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127